सर्विस करने से
बुधि कहती है कहां भी जाये, बाप का परिचय कि बाप यह नालेज देते हैं, तुमको भी अपना टाईम ना देना चाहिए। ऐसा न हो जो पछताना पड़े। ऐसे जोरे से समझाना चाहिए। इसमें याद का बल हो, वह नशा हो जो तो तीर भी लगे। जो लिखे फलाने ने यह समझाया था। बाबा देखते हैं कहां से भी ऐसी चिट्ठी नहीं आई है। तो समझा जाता है इतना बल समझाने में नहीं है। जो उनको बाप की खैंच हो। प्रदर्शनी में हजारों आते हैं कुछ तो निकलनी चाहिए ना। ज्ञान तलवार में वह जौहर नहीं है। बाप तो समझावेंगे ना योग का बल बहुत चाहिए। वह नहीं तो ज्ञान तलवार इतना असर नहीं करते हैं। जहां बाहर जाकर प्रदर्शनी आदि करते हैं सेन्टर हैं नहीं तो फिर कुछ भी निकलते नहीं। बाबा है भी गरीब निवाज़। तुम भी जो बिल्कुल शाहुकार थे अभी गरीब बने हो। माताओं में भी इतना बल नहीं है। भक्ति मार्ग के लिए तो बहुत ही पैसा निकलते हैं। ज्ञानमार्ग के लिए तो जब बुधि में आये हम जो करते हैं 21 जन्म लिए मिलेगा। निश्चय हो तो पत्र व्यवहार भी करे। वह तो होता ही नहीं। पहले तो अपनी अवस्था देखनी है सच्च2 हम याद करते हैं। बाप के साथ लव है। वह खुशी रहती है। तुम समझते हो जब तक बाप न था तो तुच्छ बुधि थे। अभी कितनी नालेज मिली है। यहां के पदमपति से भी वहां के प्रजा बहुत सुखी रहती है। तुम रात से दिन में जाते हो। बाप समझाते हैं शान्तिधाम सुखधाम को याद करो। बाकी यह दुःखधाम भूल जाओ। कर्मेन्द्रियों पर भी कन्ट्रोल करना है। मुख्य है आंखें। फिर क्रोध लोभ भी कम नहीं। लोभ भी बेताला बनाये देती है। अच्छे2 बच्चों को कब सर्विस बिगर मज़ा ही नहीं आवेगा। बाप का मददगार बनते हैं ना। जो सर्विस नहीं करते हैं वह ऐसे थोड़े ही कहेंगे शिवबाबा के मददगार है। भेस के लिए भी सर्विस बहुत है। मंदिरों में जाकर बैठे, श्मशान में जाकर बैठे। दुःख में मनुष्य को वैराग्य आता है ना। मशानी वैरागी होते हैं। बाहर बिल्कुल निकले। खलास। श्मशान से निकल घूं मारकेट में जावेंगे। तुम बच्चों को इन सभी बातों से नफरत आती है। वैराग्य है। दो रोटी खाना भगवान के गुण गाना। अभी तो बाप को ही याद करना है। इसमें परहेज भी रखना पड़ता है। अपना खान-पान रहना करना सब है मुख्य गुप्त। यह तो हरेक समझते हैं देवाग्नि धारण करनी है। देहाभिमान को भी छोड़ना है। यज्ञ के सभी काम ब्राह्मणों को ही करनी है। बाहर के आदमी तो बड़े ही डर्टी होते हैं। परन्तु करे ही क्या। वह अजन हिम्मत नहीं आई है। अमृतसर में तालाब सभी साफ करते हैं। तो बड़े2 आदमी आकर हाथ डालते हैं। रिगार्ड है ना। आपे ही मुकर्रर दिन पर आ जाते हैं। आगे तो बहुत ही अच्छी रीत मेहनत करते थे। मार करते थे। यहां बच्चों में भी नम्बरवार है। बच्चे जानते हैं यह पढ़ाई पूरी कर फिर इनकी रिजल्ट दूसरे जन्म में जाये पावेंगे। तुम संगम युग पर पढ़ते हो कलयुग के लिए। वह लोग तो सुख को योग विष्टर समान समझते हैं। अभी है तमोप्रधान बुधि। जो आता है वह करते रहते हैं। वेज़ जो हल्के बाबा ने बनाई है उस परीक्षा को समझाये प्री दे दिया तो भी हर्ज नहीं है। यह जैसे कि दान करना है। वह बाबा है? ब्रह्मा द्वारा राजयोग सिखाते हैं। बस। वेज दे दिया। शाहुकार कहेंगे पैसा लो। बोलो अच्छा जितना लो। गरीबों के लिए भी बनाना तो पड़ता है ना। शिव बाबा का भण्डारा तो सदैव ही भरपूर है। बच्चों का ही है बच्चों की ही सर्विस में लगता है। सारा दिन यही ख़यालात चलती रहे। ऐसे सर्विस है। बोलो एक बात बताने आये हैं जिससे तुम कभी भी दुःखी अशान्त न होंगे। इसमें भी बच्चों को बहुत रिगार्ड मिल सकता है। तुम बच्चों की फर्ज है सुखदाई बनना। वह तो कुछ नहीं जानते हैं। म्युजियम में भी पहले2 यह बात सिध करना है गीता का भगवान कृष्ण नहीं है वह तो बच्चा है। वह बाप है। बाप के बायोग्राफी में बच्चे का नाम डाल दिया है। पूरी2 समझानी लिखी हुई है। फिर बहुतों से तुम सहियां ले सकते हो। वह इकट्ठे करो। पतित-पावनी गंगा वह.... यह भी पीछे पहले है वह। और दूसरा फिर लिखो पतित-पावनी शिव बाबा है न कि गीता। ऐसे लिखवाये प्रश्न ढेर इक्ट्ठा करो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को याद प्यार गुडनाईट।